Need to bring the existing Indian Institute of Carpet Technology, Bhadohi under an Act of Parliament-Laid

डॉ. विनोद कुमार बिंद (भदोही) : मेरे संसदीय क्षेत्र भदोही से देश-विदेश में कालीनों का एक्सपोर्ट होता है । भदोही की अनूठी कारीगरी की अलग ही पहचान है । संसद भवन में भी भदोही की ही निर्मित कालीनों का प्रयोग हुआ है । इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं, पर बुनकरों की कमी भी लगातार रहती है । ऐसे में अगर बुनकरों की नई पोस्ट तैयार करनी है तो जिस तरह से आई.टी.आई. के तहत तकनीकी शिक्षा दी जाती है, उसी तरह से कुछ ऐसी व्यवस्थाएं की जाए, जिससे युवा पीढ़ी कालीन बुनाई की कला को सीख सके । कालीन, कारोबार से जुड़े हस्त निर्मित कालीन कला की एक विशिष्ट विद्या है और बड़े धैर्य एवं अथक मेहनत से एक कालीन बनता है । जैसे हम कृषि के क्षेत्र में खेत में बीज डालकर बुवाई करने के बाद समय-समय पर सिंचाई इत्यादि करते हैं तो हमारी फसल चार महीने में तैयार होती है, परंतु हमारा एक बुनकर जब 8-10 घंटे प्रतिदिन बुनाई का कार्य करता है तो 6 महीने में हमारा एक कालीन तैयार होता है और कभी-कभी एक वर्ष तक लग जाता है । वहीं भदोही में भारतीय कालीन प्रौद्योगिकी संस्थान है, जो एशिया का एक विशिष्ट संस्थान है । यह कालीन उद्योग के लिए काफी मददगार है । यदि भारतीय कालीन प्रौद्योगिकी संस्थान को भारतीय पेट्रोलियम तकनीकी संस्थान इत्यादि की तर्ज पर पार्लियामेंट एक्ट के अंतर्गत किया जाए तो इस क्षेत्र के लिए यह मील का पत्थर साबित होगा । भदोही लोकसभा एक ऐसा क्षेत्र है जहां प्रत्येक गांव में कालीन बुनाई से जुड़े कार्य होते हैं । अगर इस क्षेत्र में 24 घंटे विद्युत मिले तो कालीन का प्रोडक्शन इससे और भी बढ़ेगा, जिससे एक्सपोर्ट अधिक होगा और रोजगार के नए साधन भी सुसृजित होंगे । मैं माननीय मंत्री जी से मांग करता हूं कि इस कार्य को कराया जाए ।